Introduction

प्राक्कथन

गुजरात मध्यकाल से ही हिन्दी काव्य सर्जन के लिए एक उर्वरा भूमि रही है। अखा, नरसिंह महेता, दयाराम, प्रेमानंद जैसे भक्त कवियों ने अपने सरस साहित्य प्रदान से इस धरती को रस-सिक्त किया है। गुजरात की धरती धर्मपरायण आस्थावान भक्तों की धरती है। यहाँ वैसे तो हिन्दू धर्म के अनेक धार्मिक संम्प्रदाय प्रतिष्ठापित हैं किन्तु यहाँ की आम जनता अधिकांशतः सर्वदेवोपासक रही है। यही कारण है कि यहाँ जितने उल्लास से शक्ति पूजा की उपासना हेतु नवरात्री के महोत्सव का आयोजन होता है, उतना ही आनंद उल्लास गणेशोत्सव में देखा जा सकता है। चाहे रामनवमी हो, कृष्ण जन्माष्टमी, शिवरात्रि या दूर्गापूजा की नवरात्रियाँ हों, यहाँ का आम आदमी सभी देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता हुआ अपनी उदार धार्मिक आस्थाओं को प्रदर्शित करता रहा है।

वैसे भी गुजरात व्यापार और व्यवसाय का प्राचीन केन्द्र रहा है, कच्छ भुज से लेकर खंभात की खाड़ी तक यह व्यवसाय फैला हुआ था। जिसके कारण यहाँ

देश का हर वर्ण का व्यक्ति, हरेक पीठों और सम्प्रदायों में आस्था रखता आया है। संतों, साधुओं, धर्माचारियों के लिये यह आदर्श भाव भूमि रही है। आज भी हम देखते हैं कि गुजरात के गाँव गाँव में धार्मिक आस्थाओं के केन्द्र बने हुए हैं, मंदिर, मठ तथा धर्माश्रय बने हुए हैं। वैष्णव भक्तों और जैन समर्थकों का एक बड़ा वर्ण इस धरती पर अपनी श्रद्धाको निरंतर व्यक्त करता रहा है। यही कारण है कि साहित्य के क्षेत्र में भी जैन, वैष्णव, शाक्त, शैव और निर्गुण संतों के धर्मकेन्द्र और विचारकेन्द्र यहाँ संस्थापित हैं। यहाँ के सैंकड़ों ग्रंथाकारों में इन साधु संतों, मनिषियों एवं आचार्यों के साहित्य संग्रहीत है।

जहाँ तक हिन्दी साहित्य का संदर्भ है वह जितनी अधिक संख्या में एवं उच्चस्तरीय वैचारिक ग्रंथों के परिमाण में जो साहित्य यहाँ सुरक्षित है उसे देखकर सुखद आश्चर्य होता है तथा यह भी ज्ञात होता है कि इस भावमयी संवेद्य धरती पर किस प्रकार विभिन्न विचार के साहित्यकारों का कृतित्व समादरणीय रहा है। यहाँ प्राप्य हस्तलिखित प्रतियों में जो साहित्य उपलब्ध होता है उसमें सर्वाधिक साहित्य हिन्दू धार्मिक सम्प्रदाय के विभिन्न मतवादी आचार्यो, कवियों एवं साहित्यकारों का रहा है।

जहाँ तक हिन्दी साहित्य के प्रचार एवं प्रसार का प्रश्न है, वहाँ सर्वाधिक साहित्य जैन, वैष्णव सम्प्रदाय का प्रतीत होता है, और यह साहित्य अधिकांशतः ब्रजभाषा में रचा गया है। जैसा कि ज्ञातव्य है कि मध्यकाल की हिन्दी का रूप या उसकी पहचान व्रजभाषा ही थी और ब्रजभाषा का गुजरात में बहुत ही सम्मान के साथ प्रचार एवं प्रसार हुआ था। यहाँ के सौराष्ट्र प्रदेश में कच्छ भुज के महाराव लखपतिसिंह ने ''ब्रजभाषा पाठशाला'' की स्थापना की थी। जिसमें व्रजभाषा में

काव्य सर्जन की विधिवत शिक्षा दी जाती थी। तथा ब्रजभाषा काव्य रचना के प्रति सम्मोहन पैदा किया जाता था। यह सुखद आश्चर्य की बात है कि संपूर्ण देश में एक मात्र गुजरात में इस प्रकार की ब्रजभाषा काव्यशाला थी, जो लगभग 200 वर्ष तक बहुत ही व्यवस्थित, नियमबद्ध रूप से संचालित होती रही। इस पाठशाला के संचालकों में भट्टारक कनक कुशल एवं कुँवर कुशल समादृत थे, जो जैन धर्माचारी के रूप में लोक प्रसिद्ध थे।

डॉ. अम्बाशंकर नागर, डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, डॉ. किशोर काबरा, डॉ. रामकुमार गुप्त, डॉ. विष्णु विराटजी, डॉ. द्वारका प्रसाद सांचीहर, डॉ. कुंज बिहारी वार्ष्णेय, डॉ. गोवर्धन शर्मा, डॉ. जयंतिलाल त्रिवेदी, डॉ. रथमल केडिया, डॉ. निर्मला असनानी, डॉ. भगवानदास जैन, डॉ. भोलाभाई पटेल, डॉ. भ्रमर लाल जोशी, प्रो. भूपतिराम साकरिया, डॉ. महावीरसिंह चौहान, डॉ. रघुवीर चौधरी, डॉ. रमणलाल पाठक आदि अनेक विद्वानों ने गुजरात में सर्जित हिन्दी साहित्य की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला है। जिसमें मध्यकाल से लेकर वर्तमानकाल तक हिन्दी साहित्य अविधारा निरंतर अग्रसर होती रही है। इन सभी के समीक्षात्मक आलेखों - अनुसंधानों से यह स्पष्टतः आभासित होता है कि गुजरात में जो हिन्दी की साहित्य सम्पदा आज उपलब्ध है उसमें अधिकांश साहित्य धार्मिक सम्प्रदाय के अनुयायिओं, आस्थावान विद्वानों एवं आचार्यो द्वारा सर्जित हुआ है।

मैं जब एम. ए. की छात्रा थी, तब हमारे पाठ्यक्रम में ''गुजरात के हिन्दी साहित्य का इतिहास'' भी नियत था। जिसके अंतर्गत गुजरात में मध्यकाल से लेकर आजतक व्याप्त विभिन्न धर्मसम्प्रदायों का एवं उनके आचार्यो, संतों कवियों

का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मेरा मन लालायित हो उठा। उस समय जब मैंने गुजरात के हिन्दी साहित्य के विस्तृत भंडार पर दृष्टिपात किया तो में सुखद आश्चर्य से भर गई और इस वृहद-संपन्न साहित्य के प्रति मेरी जिज्ञाशा निरंतर बढ़ती ही गई।

एम. ए. करने के पश्चात हिन्दी साहित्य अकादमी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुजरात हिन्दी प्राचारणी सभा, साहित्य परिषद आदि अनेक संस्थाओं के द्वारा प्रकाशित गुजरात के हिन्दी साहित्य के लिये मेरा ध्यान आकर्षित हुआ। यहाँ बड़ौदा में ही प्राप्य विद्या मंदिर, सरस्वती भंडार, हंसा महेता पुस्तकालय, केन्द्रीय ग्रंथाकार आदि के अतिरिक्त डॉ. अक्षय कुमार गोस्वामी, श्री व्रजेश कुमारजी महाराज, डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी आदि के निजी संग्रहालयों में गुजरात के हिन्दी साहित्य का वृहद साहित्य देख मेरे मनमें इसी विषय के अनुसंधान एवं अध्ययन की ललक पैदा हुई। इसी विषय में शोधकार्य पूर्ण करने का निर्णय लिया।

मैंने अमिभावकों अपने से अनुमति ली, और हिन्दी विभाग के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदीजी से शोध निर्देशन के लिए निवेदन किया और उनकी सहज स्वीकृति के बाद ''गुजरात के प्रमुख धार्मिक संप्रदायों की हिन्दी साहित्य को देन'' विषय पर पी.एच.डी. हेतु मेरा पंजीकरण हो गया। आज मेरे निर्देशक के मार्गदर्शन पर तथा सतत अध्ययन के प्रयास से मेरा यह शोध प्रबंध सम्पन्न हो पाया है।

सर्व प्रथम में अपने गुरु एवं निर्देशक डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदीजी का शत शत आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस विषय के चयन एवं अध्ययन में अपना संपूर्ण सहयोग दिया। यहाँ कृतज्ञता व्यक्त करना तो ओपचारिकता का पालन

करना मात्र है। मैं उनकी सदा ऋणी रहूँगी। इसके साथ साथ उन सभी महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरी अध्ययन यात्रा में सहयोग प्राप्त हुआ है ।

अध्ययन की सुविधानुसार प्रस्तुत शोध प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय में गुजरात प्रांत का संक्षिप्त परिचय उसका वृत्त, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, गुजरात में हिन्दी साहित्य के उद्‌भव एवं विकास की रूप रेखा, विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों की संलग्नता तथा धार्मिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है।

द्वितीय अध्याय में गुजरात में सर्वाधिक प्रचारित वैष्णव सम्प्रदाय की परंपरित व्यवस्था, प्रचार एवं प्रसार तथा वैष्णव धर्म की अनुकूल पृष्ठभूमि के संदर्भ में यहाँ के आचार्यो मनीषियों विचारकों, कवियों एवं साहित्यकारों के परिचयात्मक विवरण के साथ वैष्णव सम्प्रदाय की प्राथमिक रूपरेखाएँ प्रस्तुत की हैं।

तृतीय अध्याय में उस स्वामीनारायण सम्प्रदाय के ऐतिहासिक-वृत को व्यक्त किया गया है जिसकी जड़ें आज सर्वाधिक प्रभाव के साथ जमी हुई हैं और समग्र गुजरात प्रदेश के अलग-अलग भागों में शाखाएँ प्रसरित हुई हैं, इसी सम्प्रदाय के अनुवर्ती विभिन्न कवियों, संतों एवं विद्वानों के साहित्य प्रदानकी चर्चा की गई है।

चतुर्थ अध्याय में जैन सम्प्रदाय की सामाजिक पृष्ठभूमि और हेमचंद्राचार्य से लेकर वर्तमानकाल के प्रमुख साहित्यकारों के अभिनव प्रदान की चर्चा करते

हुए कुछ प्रमुख कवियों, साहित्यकारों के परिचय एवं उनकी रचनाओं के परिचय दिये हैं।

पंचम अध्याय में अन्य संम्प्रदायों के अंतर्गत सूफी सम्प्रदाय, प्रणामी सम्प्रदाय, रामानंदी सम्प्रदाय, कबीरपंथी सम्प्रदाय आदिको व्याख्यायित करते हुए कुछ प्रमुख संतों एवं कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

षष्ठ अध्याय में इस समग्र साहित्य की समीक्षा एवं समालोचना प्रस्तुत करते हुए धार्मिक सम्प्रदाय के इस साहित्य का वैशिष्ट्य भी विवेचित किया गया है।

सप्तम अध्याय में समग्र साहित्य का तटस्थ मूल्यांकन करते हुए विहंगावलोकन के साथ ग्रंथ का उपसंहार प्रस्तुत किया गया है तथा अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत की गई है।

अंत में इस इस महाअनुष्ठान को सम्पन्न करने में मेरी माँ के शुभाशीष प्रेरणा एवं प्रोत्साहन ने मेरे लिए सदैव शक्ति प्रदान की है इसके लिए अपनी श्रद्धा ही व्यक्त कर सकती हूँ आभार मानना यहाँ औपचारिक ही होगा।

योगिता शिंदे

Yogita Shinde